ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर।
सो आगूं हक बड़ीरूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर।। ४२ ।।

सब सिनगार सजाकर यह सखियां अपनी शोभा के साथ बैठी हैं और आगे श्री राजजी श्री श्यामाजी सुन्दर शोभायमान हैं। उनकी हकीकत कैसे वर्णन करूं?

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द।। ४३ ।।

चांदनी के मध्य सिंहासन पर रूहों के बीच श्री राजश्यामाजी बैठे हैं। इन सबके मुखारबिन्द की शोभा के तेज की तंरग चन्द्रमा की चांदनी से टकराकर एक थंभ के समान लगती है।

जेती फिरती चांदनी, भर्‌यो नूर उद्दोत।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत।। ४४ ।।

जितनी घेरकर चांदनी आई है उतनी घेर में तेज ही तेज दिखाई देता है। रूहों और श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द के तेज से सामने चन्द्रमा की रोशनी तक एक थंभ जैसे दिखाई देती है।

इन नूर थंभकी रोसनी, पड़ी ताल पर जाए।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेर्‌यो चंद गिरदवाए।। ४५ ।।

इस नूरी थंभ की रोशनी जब ताल पर पड़ती है, तो वह तेज का थंभ जल में दिखाई देता है और आसमान तक ऐसा प्रकाश करता है मानो उसने चन्द्रमा को घेर लिया हो।

जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए।
मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए।। ४६ ।।

इस थंभे का तेज और परमधाम का तेज आपस में टकराता है। उन्हीं में जमीन का तेज और वन का तेज आसमान में जाकर समा जाता है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम तो परमधाम के हो। प्रेम की मस्ती के प्यारे श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाकर मस्ती से पिओ।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ६१६ ॥

फूलबाग

और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत।। १ ।।

तालाब की पाल के पीछे पच्छिम की तरफ बड़ा वन के कई वन शोभा देते हैं। यह बड़ा वन तालाब को घेरता हुआ रंग महल तक दिखाई देता है।

ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए।
कई मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाएं।। २ ।।

यह बड़ा वन तालाब को घेरकर धाम की पच्छिम की दीवार तक आता है। इन वनों में कई तरह के मेवा के वृक्ष हैं जो गिनती में नहीं आते।

Nijanand App

तरफ पीछल धाम के, अंन बन मेवे अनंत।
फल फूल पात कंदमूल, ए कहांलों को गिनत।। ३ ।।

यह बड़े वन के पांच वृक्ष रंग महल के पीछे अन्न वन में से निकले हैं। इनके फल, फूल, पत्ते, कंदमूल की गिनती कौन कहां तक सकता है?

ऊपर झरोखे धाम के, बन आए लग्या दिवाल।
वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कह्या बन हाल।। ४ ।।

इस वन की डालियां रंग महल की दीवार से झरोखों के ऊपर आकर लगती हैं। इनकी छाया के नीचे सुन्दर रेती है। जैसा पहले कुंजवन में वर्णन किया है।

बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल।
जब आवत हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसाल।। ५ ।।

यहां रंग महल की पच्छिम की दीवार के झरोखे से लगकर फूलों के बाग बने हैं। जब श्री राजजी श्री श्यामाजी, सखियां पच्छिम दिशा के नवीं भोम के छज्जे पर आकर बैठते हैं तो रूहें यहां की शोभा देखकर बड़ी खुश होती हैं।

लग लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए।
आगूं उठत ऊंचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए।। ६ ।।

सखियां श्री राजश्यामाजी के पास छज्जे पर एक-दूसरे के पास बैठती हैं। उनके आगे फूलबाग के फव्वारे चलते नजर आते हैं जिनसे पानी मोतियों के समान गिरता नजर आता है।

आगूं सबन के फुहारे, और आगूं सबों के फूल।
देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल।। ७ ।।

कई सखियों के सामने फव्वारे चलते हैं और सभी के आगे फूलों और चहबच्चों की शोभा है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत तेज नूर।
सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर।। ८ ।।

चहबच्चों में जल छलकता है। नहरों में सुन्दर जल तेजी से चलता है और सब बगीचों में घूमता है। यहां पेड़-पौधे की सिंचाई होती है।

जो लग्या चबूतरे चेहेबच्चा, बुजरक बड़ा विसाल।
उतरता जल इतथें, नेहेरें चलत इन हाल।। ९ ।।

जो दो बड़े चहबच्चे रंग महल के नैरित तथा वायव कोने में हैं इनसे जल निकलकर नहरों में चलता है।

विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरे लगे पोहोंचत।
इसी भांत झरोखे बगीचे, माहें रूहें केलि करत।। १० ।।

जल सब छोटे चहबच्चों से होकर आखिर तक पहुंचता है। इसी तरह से सखियां कभी-कभी झरोखों से फूलबाग में आकर खेल करती हैं।

Nijanand App

इन ऊपर छज्जे बिराजत, सिरे लगे एकै हार।
ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार।। ११ ।।

इसी फूल बाग के ऊपर रंग महल नवीं भोम में छज्जों की एक हार है। इसकी खूबी तथा किनारे पर कठेड़े की शोभा बेशुमार है।

इत खेलत कई जानवर, मृग मोर बांदर।
कई मुरग तीतर लवा लरें, कई विध कबूतर।। १२ ।।

यहां पर कई तरह के जानवर मृग, मोर, बन्दर, कई तरह के मुर्ग, तीतर, लवा और कबूतर, आदि खेलते हैं।

कई विध देत गुलाटियां, कई उलटे टेढ़े चलत।
कई कूदें फांदें उड़ें लड़ें, कई विध खेल करत।। १३ ।।

यह सब पक्षी कई तरह की गुलाटियां खाकर उलटे, टेढ़े चलकर, ऊपर-नीचे कूदकर, ऊपर उड़कर आपस में लड़ने के खेल करते हैं।

एक नाचें गावें स्वर पूरें, एक बोलत बानी रसाल।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल।। १४ ।।

एक नाचते हैं, एक गाते हैं, एक स्वर पूरते हैं, एक सुन्दर मीठी वाणी बोलते हैं। सबके नए-नए रूप-रंग दिखाई देते हैं। इस शोभा को कैसे बयान करें?

और केते कहूं जानवर, छोटे बड़े करें खेलि।
ए खुसाली खावन्द की, रूहों करावें इस्क केलि।। १५ ।।

कितने जानवर बताएं जो छोटे-बड़े सब खेल करते हैं। यह श्री राजजी महाराज को खुश करते हैं और श्री राजजी रूहों को भरपूर इश्क के खेल खिलाते हैं।

ए खेलौने खावन्द के, सब विध के सुखकार।
कोई विद्या छिपी ना रहे, जानें खेल अपार।। १६ ।।

यह सब तरह से सुख देने वाले श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। इनसे कोई कला छिपी नहीं है। बेशुमार खेल खेलते हैं।

जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत।
फिरत सैर इन बन को, जब कबूं आवें हक इत।। १७ ।।

नीचे नूरबाग में जाने के लिए दस खिड़कियां हैं। यहां से रूहें नीचे उतरती हैं और नीचे नूरबाग में घूमती हैं। कभी-कभी श्री राजजी महाराज भी यहां आ जाते हैं।

कई बन हैं फूलन के, इन बन को नाहीं सुमार।
कई भांतें रंग कई जुगतें, कई कांगरियां किनार।। १८ ।।

यहां फूलों के कई बगीचे हैं जिनकी गिनती नहीं है। कई तरह के रंग हैं और कई युक्ति से किनारे के ऊपर कांगरी की तरह फूलों की शोभा है।

Nijanand App

हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन।
हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन।। १९ ।।

यहां फूलों और चित्रों का हिसाब नहीं है। खुशबू और रंग बेशुमार हैं।

कई मेवे फलन के, कई मेवे हैं फूल।
कई मेवे डार पात के, कई मेवे कन्दमूल।। २० ।।

यहां पर कई फलों के मेवे हैं। कई मेवे फूल के हैं। कई मेवे डालों के हैं, कई पत्तों के हैं, कई मेवे कन्दमूल के हैं।

कई बन आगूं आए मिल्या, जो बन बड़ा कहियत।
ऊंचे बिरिख अति सुंदर, जित हिंडोलों हींचत।। २१ ।।

यहां नूरबाग से आकर कई वन मिले हैं। इसे बड़ा वन कहते हैं। इसमें वृक्ष ऊंचे और सुन्दर हैं और इनमें हिंडोले लटकते हैं।

कई बिरिख कई हिंडोले, कई जुदी जुदी जिनस।
स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरस-परस।। २२ ।।

कई तरह के वृक्ष हैं, कई तरह के हिंडोले हैं। सबकी अलग-अलग शोभा है। यहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां आकर सुख लेते हैं।

कहूं कहूं लम्बे हिंडोले, कहूं तिनसें बड़े अतंत।
कहूं कहूं छोटे बने, कई जुदी जुदी जुगत।। २३ ।।

कहीं-कहीं लम्बे हिंडोले आए हैं। कहीं उनसे भी बड़े और कहीं छोटे अलग-अलग तरीके के हिंडोले लगे हैं।

कहूं कहूं सेज्या हिंडोले, कहूं हिंडोले सिंघासन।
कहूं कहूं खड़ियां हींचत, यों खेल होत इन बन।। २४ ।।

कहीं सेज्या के समान, कहीं सिंहासन के समान, कहीं खड़े होकर झूलने वाले हिंडोले हैं, इस तरह का खेल हिंडोलों में झूलने का होता है।

एक सोए हिंडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत।
एक उठें एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत।। २५ ।।

एक सखी हिंडोले में सोकर झूलती है, एक बैठकर झूलती है, एक हिंडोले में जोड़ी-जोड़ी से एक उठकर, एक बैठकर झूला झूलती हैं। इस तरह से जोड़ी-जोड़ी झूला झूलकर सुख लेती हैं।

इन बन जिमी की रोसनी, मावत नहीं आकास।
इन रोसन हिंडोलों हींचत, क्यों कहूं खूबी खास।। २६ ।।

इस वन और जमीन की रोशनी आसमान में नहीं समाती। हिंडोलों के झूलने के तेज की सुन्दरता का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत।
महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस फूलबाग को उत्तर की तरफ से लाल चबूतरा आकर मिलता है। यहां की अक्ल से वहां की शोभा का कैसे वर्णन करें?

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ६४३ ।।

लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे की जगह

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल।
इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में फूल बाग के वायब कोने के चहबच्चे से लगा १२०० मन्दिर लम्बा ३० मन्दिर चौड़ा रंग महल की दीवार से लगता हुआ लाल चबूतरा है जिसके ऊपर बड़े वन की छाया है। नीचे सुन्दर चालीस बैठकें बनी हैं।

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर।। २ ।।

चबूतरे के किनारे पर सुन्दर कठेड़ा लगा है और उसके नीचे बड़े वन की ४१ वृक्षों की ४१ हारें आती हैं। सभी पेड़ों की दूरी एक-एक हांस की है।

पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर।
लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर।। ३ ।।

यह पेड़ लम्बे सीधे दस भोम तक गए हैं और इनकी छत रंग महल की चांदनी के छज्जों के साथ मिलती है। यहां लाल चबूतरे पर बैठकर श्री राजश्यामाजी तथा सखियां जानवरों का मुजरा देखते हैं।

जवेर ख्वाब जिमी के, ए खूब ख्वाब में लगत।
ए झूठ निमूना क्यों देऊं, अर्स बकाके दरखत।। ४ ।।

इस सपने की जमीन के नग स्वप्न की जमीन में ही अच्छे लगते हैं, इसलिए परमधाम के अखण्ड वृक्षों की शोभा को यहां का नमूना कैसे दें?

रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात।
नूर इन रोसनका, अवकासमें न समात।। ५ ।।

इन वृक्षों के पेड़, डाली या पत्तों का नूर (तेज) आकाश में नहीं समाता।

एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान।। ६ ।।

पेड़ों की एक छोटी डाली की रोशनी से आकाश भर जाता है तो फिर पूरे पेड़ की शोभा किन शब्दों से कही जाए?

जिमी रचंक रेत की, कछू दिया न निमूना जात।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात।। ७ ।।

वहां की जमीन के रेत के कण के लिए भी यहां नमूना नहीं है, तो फिर परमधाम के फल, फूल, पत्ते, झरोखे और मोहोलातों का वर्णन कैसे करें?

Nijanand App